अगर भक्ति निष्काम है, तो प्यार सदा बढ़ता है और कभी भी कम नही होता। अन्यथा इसमें उतार-चढ़ाव होते है। मांग पूरी होने पर यह बढ़ता है और न पूरी होने पर यह घटता है। भगवान से प्यार की कमी होने पर, आप इस दुनिया के ओर अधिक आकर्षित होते हैं। आप भगवान से दूर चले जाते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

कई लोग सांसारिक हानि को भगवान का कोप मानते हैं। भगवान कभी भी, किसी के लिए भी अकल्याण का कोई कार्य नही करता। भगवान केवल कृपा करता है। हम किसी से कोप या दुश्मनी करते है, क्योंकि वो व्यक्ति हमारे सुख के मार्ग में रोडा बनता है। भगवान का सुख या भगवान की वस्तु कोई नही छीन सकता। वास्तव में जो कुछ भी जीव के पास प्रारब्ध के अनुसार है, वह उसी का दिया हुआ है। सामग्र वस्तु और संबंध अपनी मायिक प्रकृति के कारण मात्रा एवं अवधि में सीमित होते हैं। कभी ना खतम होनेवाली चीज अनंत परिमाण की होनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति का नुकसान या लाभ उसके अपने कर्मों का नतीजा है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हिंदू का कहना है कि नुकसान भगवान की करुणा है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही कार्यों फल मिलता है। इसके बारे में भगवान या अन्य कोई कुछ नहीं कर सकता। यह समझना चाहिए कि सांसारिक संबंध, धन, संपत्ती, प्रतिष्ठा स्थायी नहीं हैं। जहां जन्म है, वहां मौत होनी ही है। मृत्यु को नियंत्रित करने वाले कोई नियम नहीं हैं। युवा मर जाता रहता है जबकि बूढ़ा जीवित रहता है। मृत्यु के बाद, सभी को अपने कर्मों के अनुसार भविष्य में जीवन मिलते हैं। कई बार ऐसा होता कि जो कोठी उसने बनायी, उसी कोठी से दंडा खा कर बाहर आना

पडता है, जब वो कुत्ता बनकर उसी कोठी के अंदर घुसता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

मृत व्यक्ति को पता नहीं होता कि उसके प्रस्थान के बाद क्या होता है। इसलिए आपके दुःख का या रोने धोने का मृत व्यक्ति को कोई पता नहीं चलता। फिर शोक करने का उपयोग क्या है?दुःख उस व्यक्ति से आपके लगाव का परिणाम है। जब आप किसी के संपर्क में होते हैं तो लगाव बढ़ता है। मृत्यु के बाद यह संपर्क टूट जाता है और इसलिए बेहतर मौका है कि वैराग्य का अभ्यास किया जाय। वैराग्य आध्यात्मिक उन्नति का एक अनिवार्य हिस्सा है और इसलिए हिंदू का कहना है कि कोई भी सांसारिक नुकसान भगवान की करुणा है। सांसारिक संपत्ति मन को उलझाये रखती है और मन भगवान पर केंद्रित नहीं हो सकता। कुंती ने श्रीकृष्ण से वर मांगा, 'मुझे विपत्ती दो, संसार का अभाव दो ताकि मैं हमेशा आपके बारे में सोच सकूं।'

निष्कर्ष ये है कि हमें भगवान से कोई सांसारिक वस्तु नही मांगनी चाहिए और ना ही सांसारिक हानि पर दुःखी होना चाहिए और ना ही निराश महसूस करना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132